जातक कथा (उलूकजातकम्)

सन्दर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **संस्कृत-भाग** के **'जातक कथा'** नामक पाठ के **'उलूकजातकम्'** नामक शीर्षक से अवतरित है।

- **अतीते प्रथमकल्पे जनाः एकमभिरूपं सौभाग्यप्राप्तं**
  प्राचीन काल के प्रथम कल्प में लोगों ने एक सुन्दर सौभाग्यशाली
- **सर्वाकारपरिपूर्णं पुरुषं राजानमकुर्वन्।**
  और समग्र आकृति से परिपूर्ण पुरुष को राजा बनाया।
- **चतुष्पदा अपि सन्निपत्य एकं सिंह राजानमकुर्वन्।**
  जानवरों ने भी एकत्रित होकर एक शेर को राजा बनाया ।
- **ततः शकुनिगणाः हिमवत्- प्रदेशे एकस्मिन् पाषाणे सन्निपत्य**
  उसके बाद पक्षीगण हिमालय प्रदेश में एक शिला पर एकत्रित होकर'
- **'मनुष्येषु राजा प्रज्ञायते तथा चतुष्पदेषु च।**
  मनुष्यों में राजा सुना जाता है और जानवरों में भी
- **अस्माकं पुनरन्तरे राजा नास्ति।**
  लेकिन हमारे बीच में राजा नहीं है।
- **अराजको वासो नाम न वर्तते।**
  बिना राजा के रहना उचित नहीं है।
- **एको राजस्थाने स्थापयितव्यः 'इति उक्तवन्तः'।**
  किसी एक को राजा के पद पर स्थापित करना चाहिए'- ऐसा कहा।
- **अथ ते परस्परमवलोकयन्तः एकमुलूकं दृष्ट्वा 'अयं नो रोचते' इत्यवोचन।**
  तब उन्होंने एक दूसरे पर दृष्टि डालते हुए एक उल्लू को देखकर कहा- 'यह हमको अच्छा लगता है।'
- **अथैकः शकुनिः सर्वेषां मध्यादाशयग्रहणार्थं त्रिकृत्वः अश्रावयत्।**
  इसके बाद एक पक्षी ने सभी के बीच में राय जानने के लिए तीन बार घोषणा की ।
- **ततः एकः काकः उत्थाय 'तिष्ठ तावत्'**
  तब एक कौआ उठकर बोला-'जरा ठहरो।'
- **अस्य एतस्मिन् राज्याभिषेककाले एवंरूपं मुखं,**
  इसका इस राज्याभिषेक के समय ऐसा मुख है
- **क्रुद्धस्य च कीदृशं भविष्यति!**
  तो क्रुद्ध होने पर कैसा होगा?
- **अनेन हि क्रुद्धेन अवलोकिताः वयं तप्तकटाहे**
  इसके क्रुद्ध होकर देखने पर तो हम लोग गर्म कड़ाही में
- **प्रक्षिप्तास्तिला इव तत्र तत्रैव धडक्ष्यामः।**
  डाले तिलों की भांति वहीं- वहीं पर भुन जायेंगे
- **ईदृशो राजा मह्यं न रोचते इत्याह-**
  ऐसा राजा मुझे अच्छा नहीं लगता ऐसा बोला-
- ***न मे रोचते भद्रं वः उलूकस्याभिषेचनम्।***
  मुझे आपका उल्लू को राज्याभिषेक करना अच्छा नहीं लगता
- ***अक्रुद्धस्य मुखं पश्य कथं क्रुद्धो भविष्यति।।***
  इसके अक्रुद्ध मुख को देखो, क्रुद्ध होने पर यह कैसा लगेगा ?
- **स एवमुक्त्वा 'मह्यं न रोचते,' 'मह्यं न रोचते'**
  वह ऐसा कहकर 'मुझे अच्छा नहीं लगता', 'मुझे अच्छा नहीं लगता',
- **इति विरुवन् आकाशे उदपतत्।**
  ऐसा चिल्लाता हुआ आकाश में उड़ गया।
- **उलूकोऽपि उत्थाय एनमन्वधावत्।**
  उल्लू भी उठकर उसके पीछे दौड़ा।
- **तत आरभ्य तौ अन्योन्यवैरिणौ जातौ।**

www.gyansindhuclasses.com

तभी से लेकर वे एक दूसरे के बैरी हो गए।

- **शकुनयः अपि सुवर्णहंसं राजानं कृत्वा अगमन्।**
  पक्षीगण भी सुवर्णहंस को राजा बनाकर चले गए।

नृत्यजातकम्

सन्दर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **संस्कृत-भाग** के **'जातक कथा'** नामक पाठ के **'नृत्यजातकम्'** नामक शीर्षक से अवतरित है।

- **अतीते प्रथमकल्पे चतुष्पदाः सिंह राजानमकुर्वन्।**
  विगत प्रथम कल्प में चौपायों ने सिंह को राजा बनाया।
- **मत्स्या आनन्दमत्स्यं, शकुनयः सुवर्णहंसम्।**
  मछलियों ने आनन्द मछली को एवं पक्षियों ने सुवर्ण हंस को राजा बनाया।
- **तस्य पुनः सुवर्णराजहंसस्य दुहिता हंसपोतिका अतीव रूपवती आसीत्।**
  उस सुवर्ण राजहंस की पुत्री हंसपोतिका अत्यन्त सुन्दरी थी।
- **स तस्यै वरमदात् यत् सा आत्मनश्चित्तरुचितं स्वामिनं वृणुयात् इति।**
  उसने उस हंसकुमारी को वर दिया कि वह अपने मनोनुकूल पति को चुन ले।
- **हंसराजः तस्यै वरं दत्त्वा हिमवति शकुनिसङ्घे संन्यपतत्।**
  हंसराज ने उसे वर देकर हिमालय पर पक्षियों की सभा बुलायी।
- **नानाप्रकाराः हंसमयूरादयः शकुनिगणाः समागत्य**
  नाना प्रकार के हंस मयूर आदि पक्षीगण आकर
- **एकस्मिन् महति पाषाणतले संन्यपतन्।**
  एक विशाल शिला पर एकत्रित हुए।
- **हंसराजः आत्मनः चित्तरुचितं स्वामिकम् आगत्य वृणुयात् इति दुहितरमादिदेश।**
  हंसराज ने 'अपने चित्त को रुचिकर लगने वाला पति आकर चुनलो ऐसा पुत्री को आदेश दिया ।
- **सा शकुनससंङ्घे अवलोकयन्ती**
  उसने पक्षी समूह को देखते हुए
- **मणिवर्णग्रीवं चित्रप्रेक्षणं मयूरं दृष्ट्वा**
  नीलमणि के रंग की गर्दन और रंग-बिरंगे पंखों वाले मयूर को देखकर
- **'अयं मे स्वामिको भवतु' इत्यभाषत।**
  यह मेरा स्वामी हो, ऐसा कहा।
- **मयूरः 'अद्यापि तावन्मे बलं न पश्यसि'**
  मोर ने 'अभी मेरे बल को नहीं देखा है'
- **इति अतिगर्वेण लज्जाञ्च त्यक्त्वा**
  ऐसा कह अति गर्व से और लज्जा त्यागकर
- **तावन्महतः शकुनिसङ्घस्य मध्ये पक्षौ प्रसार्य नर्तितुमारब्धवान्**
  उस विशाल पक्षियों की सभा के बीच पंख फैलाकर नाचना आरम्भ कर दिया
- **नृत्यन् चाप्रतिच्छन्नोऽभूत् ।**
  और नाचते हुए नग्न हो गया ।
- **सुवर्णराजहंसः लज्जितः 'अस्य नैव ह्रीः अस्ति न बर्हाणां समुत्थाने लज्जा।**
  स्वर्ण वर्ण राजहंस ने लज्जित होकर, 'इसे न लज्जा है न पंखों को उठाने में संकोच,
- **नास्मै गतत्रपाय स्वदुहितरं दास्यामि' इत्यकथयत् ।**
  इस लज्जाहीन को अपनी पुत्री नहीं दूँगा ऐसा कहा।
- **हंसराजः तदैव परिषन्मध्ये आत्मनः भागिनेयाय 'हंसपोतकाय' दुहितरमदात्।**
  हंसराज ने उसी परिषद् के बीच अपने भांजे हंसकुमार को पुत्री दे दी ।
- **मयूरो हंसपोतिकामप्राप्य लज्जितः तस्मात् स्थानात् पलायितः।**
  मोर हंस-पुत्री को न पाकर लज्जित होकर उस स्थान से भाग गया।
- **हंसराजोऽपि हृष्टमानसः स्वगृहम् अगच्छत्।**
  हंसराज भी प्रसन्न मन से अपने घर को चला गया।

www.gyansindhuclasses.com
www.gyansindhuclasses.com